# डिजिटल युग में सोशल मीडिया का नया सफर

*प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,*

*प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ*

नए मीडिया का जन्म एक नए बदलते वैश्विक आर्थिक संबंधों की पृष्ठभूमि में हुआ है। इसने जहाँ एक और इंटरनेट के माध्यम से आई सूचना क्रांति को मनुष्यों और समाजों के जीवन से सीधे–सीधे जोड़ दिया ,वहीं दूसरी ओर नई तकनीकी आविष्कारों के लिए जमीन तैयार की है,पर जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि कोई भी तकनीकी अपने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विचारधारा भी लेकर आती है। इंटरनेट के आने के साथ–साथ एक नया सवाल खड़ा हुआ कि जो तकनीकी, इंटरनेट और कंप्यूटर के साथ–साथ एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के गरीब देशों में आ रही है और जिसे नवजागरण की मशाल बताया जा रहा हैद्य वह क्या सच में बिना किसी राजनीतिक आर्थिक बोझ के आ रही है? या फिर उसके माध्यम से कोई नए तरह का साम्राज्यवाद भी आ रहा है। यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है की नई तकनीक के आने के बाद आर्थिक–सामाजिक विभेद के साथ एक नया विभेद भी उठ खड़ा हुआ है और वह विभेद था डिजिटल विभेद। समाज दो भागों में बँटा– एक जो इस तकनीकी को जानते थे–दूसरे जो इसे नहीं जानते थे। एक वह जो इस तकनीकी का खर्च उठा सकते थे, दूसरे वे जो इस तकनीकी का खर्च नहीं उठा सकते थे। एक वे जो इस तकनीकी के लाभ उठाकर अपनी सत्ता बरकरार रखना और बढ़ाना चाहते थे और दूसरे वे जो इस सत्ता की ताकत के नीचे पिसने के लिए मजबूर कर दिए जाते थे।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति को आसान,प्रभावी और उपयोगी बना दिया है । वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया में एप्स से ज्यादा उपयोगकर्ताओं की सृजनशीलता देखने को मिलती है। इस सृजनशीलता ने सोशल मीडिया में एक विशेष प्रकार की भाषा की रचना कर डाली है। मुख्य रूप से इसके दो प्रकार हैं– परिवर्णी शब्द (Acronym) (कई शब्दों का इस्तेमाल करने के बदले उन शब्दों के शुरू और अंत के अक्षरों से एक नया शब्द की रचना करना) और मीम(Meme) कहा जाए तो यह दो विधाएँ सोशल मीडिया की जान हैं । परिवर्णी शब्दों का इस्तेमाल इसलिए शुरू हुआ कि लिखकर बात करने में समय अधिक लगता है– उदाहरण के लिए आजकल लोल lol शब्द का प्रचलन बढ़ रहा है, जिसका पूर्ण स्वरूप लाफ आउट लाऊड है। यदि किसी व्यक्ति को किसी की पोस्ट विचित्र या हास्यपूर्ण लगती है तो वह यह कहने के बदले कि उसे बहुत हंसी आई केवल एल ओ एल लिख देता हैद्य पोस्ट लिखने वाला भी जवाबी पोस्ट डालने वाले की बात आसानी से समझ जाता है। दुनिया की कई अन्य भाषाओं ने भी सवस के लिए शब्द विकसित कर लिए हैं– उदाहरण के लिए रूसी भाषा में सवस के लिए एक XAXA-- स्पेनिश में jajaj। और जापानी में एक w या ww दो स्मॉल डब्लू लिखते हैं । कई अन्य भाषा–भाषी तो एल ओ एल के लिए केवल अंकों का इस्तेमाल करने लगते हैं– जैसे थाईलैंड में 555 लिखते हैं। हिंदी भाषा में अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। जाहिर है कि इसके दो कारण नजर आते हैं– पहला तो यह की किसी भाषा में ऑनलाइन विषय वस्तु के निर्माण और उसे प्रोत्साहित करने के लिए संपर्क भाषा का होना जरूरी हैद्य अंग्रेजी के अलावा चीन–रूस और थाईलैंड के पास ऐसी भाषाएँ है, इसलिए वह एक्रोनिम् का विकास करने में सक्षम हुए हैं। दूसरा कारण है कि उस देश के लोगों

की इंटरनेट साक्षरता द्य जहाँ तक हिंदी की बात है, तो दोनों ही कारण उसके दामन से दूर हैं।"[1]

आज नया मीडिया सबसे विश्वसनीय और उपयोगी त्वरित संचार का माध्यम माना जाता है। गाँव हो या शहर कस्बा हो या फिर नगर सभी जगह पर नए मीडिया का कोई ना कोई रूप अवश्य मिल जाता है, जब से इंटरनेट का प्रसार दुनिया भर में हुआ है, तब से दुनिया एक मुठ्ठी में सिमट सी गई है। अर्थात यहाँ पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से, एक समुदाय दूसरे समुदाय से, एक समाज दूसरे समाज से, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से आज इंटरनेट के माध्यम से आसानी से जुड़ते जा रहे हैं। इंटरनेट के प्रयोग से सूचनाओं का आदान–प्रदान तेजी से बढ़ा है। इंटरनेट माध्यम की वजह से आज हम दुनिया को बिल्कुल एक नए नजरिए से देख पा रहे हैं। हमारे विचारों के आदान–प्रदान का तरीका हमारी खुशियां और त्योहार मनाने का तरीका, हमारे पर्यटन का तरीका, हमारी राजनीति करने का तरीका, हमारे मनोरंजन का तरीका, हमारे खेलने का तरीका, हमारी बातचीत करने का तरीका, हमारे आक्रोश और प्रतिरोध करने का तरीका, सभी कुछ इस नई तकनीकी से प्रभावित हुआ है । हम इंटरनेट की इस व्यापकता से आतंकित और आनंदित हैं। हम आज घर बैठे–बैठे दुनिया भर की सैर करने के साथ ही दुनिया के इतिहास को खगाल भी सकते हैं। पृथ्वी ही नहीं बल्कि ब्रह्मांड के रहस्यों को जान सकते हैं। आज हम पूरी दुनिया की सूचना, ज्ञान और मनोरंजन का अपने हाथ की हथेली के बराबर भर के यंत्र में पा लेते हैं। यह यंत्र निरंतर हमारे साथ रहता है। संभवत "मानव सभ्यता के इतिहास का यह एक मात्र ऐसा यंत्र होगा जिसके बिना अनेक बार हम स्वयं को अधूरा अनुभव करते हैं । इसे स्मार्टफोन या एंडयोइडफोन कहा जाता हैद्य स्मार्टफोन ने हमारे सामाजिक संबंधों की भाषा को बदल दिया है। कोई भी नई तकनीकी किसी सामाजिक निर्वात में तैयार नहीं होती। उसका एक सामाजिक संदर्भ, आवश्यकता और उपयोग होता है।"[2]

भारत में इंटरनेट की पहली चुनौती उन फोंट्स की थी जिसमें वेबसाइट्स की सामग्री को एक ही तरीके से सभी कंप्यूटरस पर पढ़ा–देखा जा सके। वेब दुनिया ने हिंदी के क्षेत्र में इस समस्या को दूर करने के लिए अपने वेबसाइट पर ही हिंदी के फॉट्स को डाउनलोड करने की सुविधा प्रदान कर दी। इसके साथ ही हिंदी में इंटरनेट पर पढ़ने–लिखने की सुविधा कुछ सीमा तक हल हो गई। यह एक बेहतरीन कदम था क्योंकि इस माध्यम की विशेषता ही अंतर क्रियात्मक है। अतः यूनिकोड फॉट्स ही यह काम कर सकता था द्य भले ही आपके इंटरनेट में कोई विशेष फोंट ना हो पर ऑनलाइन व इस प्रकार उपलब्ध हो कि कोई भी कभी भी उसे इसका उपयोग कर सके द्य इसी का परिणाम है– 'यूनिकोड कन्सोर्शियम'। इसमें सभी देशों की सरकारों के प्रतिनिधि शामिल हैं । सूचना प्रौद्योगिकी भारत सरकार इसका सदस्य भी है। इस कन्सोर्शियम' में सभी सदस्य देशों की भाषाओं के मानक कोडों में को शामिल किया गया है। यूनिकोड के आने से जहाँ एक ओर भाषा की समस्या दूर हुई है वहीं हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में टाइपिंग के लिए की–बोर्ड एक समस्या बनकर उभरी क्योंकि की–बोर्ड का स्वरूप इंग्लिश को ध्यान में रखकर बनाया गया था। यूरोप और विश्व के अनेक देशों की भाषाओं की लिपि रोमन में थी इसलिए इन देशों में कंप्यूटर पर काम करना आसान था, परंतु यूनिकोड पर आधारित की–बोर्ड या फिर डिजिटल कुँजी पटल ना होने से अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं– इसके लिए एक तरफ हिंदी के लिए यूनिकोड आधारित की–बोर्ड बनाना और दूसरा इसके लिए डाटाबेस तैयार करना था। यह सब सुविधा अब वर्तमान समय में इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध हो गई हैं, और अब सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग धड़ले से हो रहा है। लेकिन भाषा के सन्दर्भ में

यहाँ एक प्रश्न उठाना लाजिमी है कि क्या नई तकनीकी ने भारतीय भाषाओं और बोलियो के लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा कर दिया है? तो इसका उत्तर थोड़ा पेचीदा है– एक तरफ तो यह सच है की अंग्रेजी के वर्चस्व को इंटरनेट से पोषित नए मीडिया ने बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी बात यह भी सही है कि इसी नए मीडिया और इंटरनेट ने हमें यह ताकत दी है कि हम अपनी बोलियां और भाषाओं को और अधिक लोगों तक पहुँचाएँ । अंग्रेजी की व्यापकता को टेक्नोलॉजी से जोड़कर भी देखा जाता है। "अक्सर कह दिया जाता है कि कंप्यूटर, इंटरनेट, कॉल सेंटर वगैरा ने अंग्रेजी को बहुत शक्तिशाली बना दिया है और इन चीजों की वजह से अंग्रेजी सारी दुनिया पर छा जाएँगी। तकनीक ने ही आज यह संभव कर दिया है कि हिंदी, बंगाली, तमिल वगैरा ही नहीं बल्कि ब्रज, अवधी, मगही, भोजपुरी, संथाली आदि सभी भाषाएं पहले से कहीं अधिक चलन में आ गई हैं।"[3] उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आप अवधी या भोजपुरी बोलने वाले हैं और आपको अपने किसी परिजन के चार गीत याद हैं। पहले आपके पास कोई ऐसा तरीका नहीं था कि दुनिया में जहाँ–जहाँ अवधी या भोजपुरी बोलने वाले लोग हैं उन तक अपने परिजनों के उन गीतों को पहुंचा सकें लेकिन अब यह सोशल मीडिया की वजह से बहुत आसान हो गया है। आप कंप्यूटर,लैपटॉप या इन्टरनेट से युक्त मोबाइल पर उनको लिखिए और एक क्लिक के साथ पूरी दुनिया में भेज दीजिए द्य यही नहीं ,आप भोजपुरी गीतों की एक वेबसाइट खोल सकते हैंद्य ऐसे बहुत सारी वेबसाइट बनाई गई हैं। वही टेक्नोलॉजी जो अंग्रेजी को फैलाकर दूसरी भाषाओं को दबाती है, वही आज दूसरी भाषाओं को सबल और सक्षम भी बना रही है।

यह सच है कि परंपरागत मीडिया के विपरीत नया मीडिया एक प्रकार से सभी उपलब्ध संचार माध्यमों का समागम है। इसमें अखबार की तरह टेक्स्ट भी है और रेडियो की तरह ध्वनि भी,टेलीविजन और सिनेमा की तरह दृश्य और ध्वनि दोनों भी इस माध्यम पर हैं। इस तरह यह एक विशिष्ट माध्यम बन जाता है। अखबार की ताकत उसके शब्द होते हैं, रेडियो की ताकत ध्वनि और सिनेमा तथा टेलीविजन की भाषा दृश्य होते हैं। यही सब माध्यम उसकी भाषा होते हैं, उन्हीं के माध्यम से यह मीडिया आम दर्शक, पाठक, श्रोता से संवाद करते हैं। सामान्यत यह माना जाता है कि भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम होती है परंतु भाषा में उसका समाज, इतिहास, संस्कृति बोलती है। साथ ही साथ, उस भाषा के पूर्वाग्रह, मान्यताएँ और अंधविश्वास भी बोलते हैं और जब मीडिया को मनुष्य का विस्तार कहा जाता है तो यह कैसे संभव है कि मनुष्य के समाज के विविध रूपों का प्रभाव मीडिया पर ना पड़ेद्य नए मीडिया की भाषा ने एक नई चुनौती भी पेश कर दी है। यह चुनौती माध्यम की है। यह माध्यम वर्चुअल माध्यम है। इसे आभासी संसार भी कह सकते हैं। और जब हम आभासी संसार की बात करते हैं तो बहुत कुछ ऐसा जिसे वास्तविक होना चाहिए और वह वर्चुअल होकर ही रह जाता हैद्य यह सही है कि आभासी संसार भी वास्तविक संसार का प्रतिबिंब है, उसकी परछाई। इसलिए वास्तविक संसार संसार के संघर्ष, चुनौतियाँ, कठिनाइयां और क्रूर बर्बर संसार के चित्र वर्चुअल माध्यम में भी अभिव्यक्त हो जाते हैं। "वास्तविक संसार की हिंसा, असमानता और असंतोष भी इससे बड़े जनसमुदाय तक पहुँचता है। इस नाते यह माध्यम हमारे समय की नब्ज को पकड़ता है पर साथ ही साथ यह वर्चुअल माध्यम कहीं ना कहीं हमारी संवेदनाओं को भोथरा भी कर रहा है– उदाहरण के लिए फेसबुक या ट्विटर जैसे माध्यमों पर अकसर किसी दुःखद घटना की सूचना मिल ही जाती है। अनेक लोगों के संसार से विदा होने के समाचार भी मिल जाते हैं। वहाँ अक्सर यह देखने में आता है कि लोग नमन श्रद्धांजलि या दीप लिखकर आगे बढ़ जाते हैं और अगली ही पोस्ट में किसी मित्र की शुभ

सूचना पर उसे खूब बधाइयां भी देते हैं तो इस प्रकार हमारी संवेदनाएं भी कहीं ना कहीं खोखली हो रही हैं। इसी से भाषा के अर्थ ही होने का भाव और भय भी व्याप्त है।"[4]

सरकारी स्तर पर मीडिया की बात की जाए तो मीडिया में प्रचार को लेकर अब सरकारों की प्राथमिकताएँ भी तेजी से बदल गई हैं। नए मीडिया को वैकल्पिक मीडिया इसलिए कहा जाता है कि यह आम जनता को भी अपने समाज में घट रहे घटनाक्रम को एक दूसरे से साझा करने की सुविधा देता है। यह मुख्यधारा के मीडिया के विपरीत किसी संस्थान की चाकरी करते हुए की गई पत्रकारिता नहीं है । यह व्यक्ति जोकि किसी न किसी समाज का हिस्सा है, किसी न किसी शहर या देश का नागरिक है, को एक पत्रकार का धर्म निभाने का अवसर प्रदान करता है। कोई नागरिक जब नए मीडिया के किसी एक माध्यम का उपयोग करने का निश्चय करता है तो जानता है कि वह अपने समाज को किसी न किसी समस्या से अवगत कराना चाहता हैद्य वह सरकारी तंत्र की नाकामियों और स्वयं अपने समाज के नागरिकों की लापरवाहियों को समाज के सामने लाता है। उसका उद्देश्य यही होता है कि वह समाज को जागरूक करना चाहता है।"[5]

सरकार का यह भी दायित्व है कि वह आम उपभोक्ताओं को भी जागरूक करें। उपभोक्ताओं को भी यह समझना होगा कि उनके हाथ में जो मोबाइल है, जिनके जरिए वे सोशल मीडिया वेबसाइट पर जाते हैं, वह एक बम है और इसे भारत के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है द्य यह दायित्व हर भारतीय का भी है कि उसे अगर कोई गलत जानकारी दिखती है तो वह इसका खुद से प्रतिकार करें। इस सन्दर्भ में आगे आकर महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश व मुंबई के शहरी इलाकों में कई साइबर थाने कार्यरत हैं। देश के लगभग सभी राज्यों सहित दिल्ली पुलिस ने भी साइबर सेलों का गठन कर लिया है। "देश के अन्य राज्यों में भी साइबर अपराध से निपटने के लिए आई.टी. जानकारों की मदद से पुलिस काम कर रही है, मगर जिस तेजी से साइबर फ्रॉड व अपराध की संख्या दिनों दिन बढ़ रही है, आए दिन सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर समाज में अफवाह फैलाकर अशांत उत्पन्न की जा रही है, वैसे इसके लिए एक राष्ट्रीयकृत नीति की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता है।"[6] एक उपभोक्ता के रूप में एक आम आदमी की जिम्मेदारी बनती है कि जो वेबसाइट सूचना दे उसके खिलाफ एक कदम उठाने के लिए सरकारी एजेंसियों को लिखित सूचना दे सकता है, जिस पर गैर जिम्मेदार या आपत्तिजनक सामग्री है या फिर किसी नजदीक के थाने को सूचित कर सकता है। इसके अलावा वह 'कंप्यूटर नेटवर्क रिस्पांस टीम' को भी लिख सकता है । अगर आपके कोई जानने वाले किसी गलत हरकत में शामिल हैं। तो वह उन्हें भी रोक सकते हैं।"[7]

भारत सरकार के कुछ सहयोगी दलों के नेताओं का कहना है कि सोशल मीडिया यानी फेसबुक और ट्विटर जैसी साइटों को भी नियमन के दायरे में रखा जाना चाहिए, यह सही है और इसमें कोई दो राय नहीं, लेकिन नियमन के मायने क्या हैं? लम्बे समय से लोगों को ऐसा आभास होता आ रहा है कि अक्सर पूर्ववर्ती सरकारें सूचना छुपाने के लिए जानी जाती हैं या जानकारी जैसे आमजन को मिलनी चाहिए वह उस रूप में नहीं मिल पाती हैंद्यद्य पारंपरिक मीडिया से वैसे ही लोगों का विश्वास उठता जा रहा है और लोग तेजी से वैकल्पिक मीडिया की तरफ बढ़ते जा रहे हैं, शायद यही कारण है कि फेसबुक और ट्विटर जैसे साईटों से प्रतिदिन लाखों लोग जुड़ते जा रहे हैं, जहाँ वे अपने मन की बात कह सकने के साथ ही अपने इलाकों की जानकारी देने के साथ ही खबरें भी शेयर कर सकते हैं।

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN: 2454-1826 (Online)

## सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ


1. राजभाषा भारती, जून 2023, पृष्ठ संख्या 111 –112
2. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया–राकेश कुमार– अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 222
3. भाषा और भूमंडलीकरण,संपादक रमेश उपाध्याय,संज्ञा उपाध्याय,पृष्ठ,27–28
4. अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2018 –पृष्ठ संख्या 212
5. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया– राकेश कुमार– अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 243
6. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर– ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2020,पृष्ठ संख्या 191
7. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर– ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2020, पृष्ठ संख्या 192